जनवाचन आंदोलन

जनवाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव–गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने–लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव–गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरुक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 6 रुपये

दलुदास के हाथ क्यों कटे ?

संजय झा

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

दलुदास के हाथ क्यों कटे? : संजय झा
Daludas Ke Hath Kayo Kate ?: Sanjay Jha

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित
© सर्वाधिकार सुरक्षित:
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: रत्नाकर
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

रेखांकन: पंकज झा
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1999, 2003, 2006

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 6 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi****, **Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,*** **email: bgvs@vsnl.net**

दलुदास के हाथ क्यों कटे?

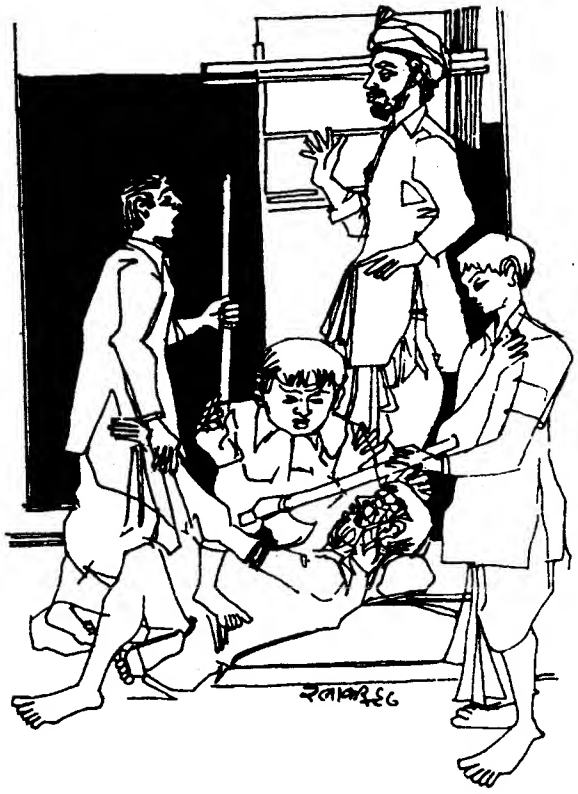

संजय झा

दलुदास के हाथ क्यों कटे ?

कोशी नदी के किनारे एक गाँव है। उस गाँव का नाम मुरादपुर है। मुरादपुर गाँव का थाना नौहट्टा है। जिला सहरसा है। यह इलाका उत्तर बिहार में पड़ता है। इस इलाके से महत्वपूर्ण वहाँ की एक घटना है। जो एक कहानी बन गयी है। इस कहानी का नायक दलुदास है। दलुदास के पास खेती की जमीन नहीं है। वह भूमिहीन है। गाँववाले उसे भला आदमी मानते हैं। उसने कभी किसी का कोई बुरा नहीं किया। दलुदास को पढ़ना-लिखना नहीं आता। लेकिन कुछ न कुछ वह सोचता रहता है। वह सही और गलत का फर्क समझता है।

लक्ष्मीपुर टोला के लोग दलुदास को दलुकाका कहकर पुकारते हैं। लेकिन गाँव के पैसेवाले लोग उसे दलुआ कहते हैं। दलुदास साठ साल का है। उसके सफेद बाल हैं और सफेद दाढ़ी है। घुटने

तक की उसकी धोती फटी हूई है। कंधे पर मैला-कुचला-पुराना अंगोछा है। धोती में खैनी का डिब्बा वह हर वक्त लपेट कर रखता है। काले चेहरे पर सफेद दाढ़ी बहुत खिलती है।

कहानी के नायक दलुदास का चित्रण करने से अब घटना को समझने में सहूलियत होगी। गाँव के जमींदार गरीबों के बूढ़ों, औरतों और बच्चों पर भी जुल्म ढ़ाते हैं। दलुदास की पत्नी का नाम

रामरतिया है। फुलिया दलुदास की इकलौती बेटी है। उसकी शादी बगल के गाँव तेलहर में काफी पहले हुई थी। फुलिया के ससुर सहरसा कचहरी में चपरासी के पद पर हैं। दलुदास और उसकी पत्नी को केवल अपने काम से मतलब रहता है। गाँव की राजनीति से उन्हें कोई लेना-देना नहीं।

मुरादपुर गाँव के सबसे बड़ा जमींदार का घर हवेली के नाम से मशहूर है। दलुदास इस हवेली में बचपन से ही काम करता था। एक तरह से दलुदास बंधुआ मजदूर था। जमींदार के खलिहान की देखभाल और मवेशी चराने का काम दलुदास का था। रमरतिया हवेली में चौका-बर्त्तन से लेकर कूटान-पीसान करती थी।

लक्ष्मीपुर टोला में चालीस घर गरीबों के हैं। सब कबीर पंथी हैं। जब कभी दलुदास फुर्सत में अपनी झोपड़ी में होता तो कबीर का निर्गुण भजन गाया करता। वह निर्गुण गाने में माहिर था। सांच को कभी न आंच लागो रे, निर्गुण पद दलुदास गुनगुनाता रहता।

मुरादपुर गाँव में एक बार खूब बाढ़ आई। सब कुछ डूब गया। लक्ष्मीपुर टोला का तो नामोनिशान मिट गया। दो महीने तक सब रिंग बांध पर खुले आसमान के नीचे रहे। माल, मवेशी, फसल सब बर्बाद हो गयी। लोग दाने-दाने को मोहताज हो गए। लक्ष्मीपुर टोला के लोगों पर जमींदार का कर्ज चढ़ता ही गया। बाढ़ का पानी जब गया तो लोगों ने महाजन से कर्ज लेकर अपनी-अपनी झोपड़ी बनाई। दलुदास ने भी चार सौ रुपये का कर्ज जमींदार से लिया। बाढ़ की तबाही के बाद भुखमरी और महामारी फैलने लगी। तभी विधानसभा चुनाव की घोषणा हो गई। राजनीतिक दलों के उम्मीदवार प्रचार करने लगे। मुरादपुर गाँव में चुनाव की सरगर्मी तेज हो गई। नेताओं का आना-जाना शुरू हो गया।

धूल उड़ाती जीप के पीछे गाँव के बच्चों का झुंड नंग-धड़ंग

दौड़ता था। दलुदास भी तेज कदमों से जीप के पीछे-पीछे जाता था। जहाँ जीप रूकती, वहाँ भाषण होता। एक दिन में पाँच-सात जीप आती थी। सारे नेता भाषण देते। आश्वासन देते। वे कहते थे कि बाढ़ अब कभी गाँव नहीं आएगी। गरीबों को रोजगार दिलाया जाएगा। घर बनाने के लिए सरकार से कर्ज मिलेगा।

एक पार्टी का निशान था गुलाब का फूल। दूसरा पार्टी का निशान था मोटरगाड़ी। तीसरा पार्टी का साइकिल का चक्का। चौथा

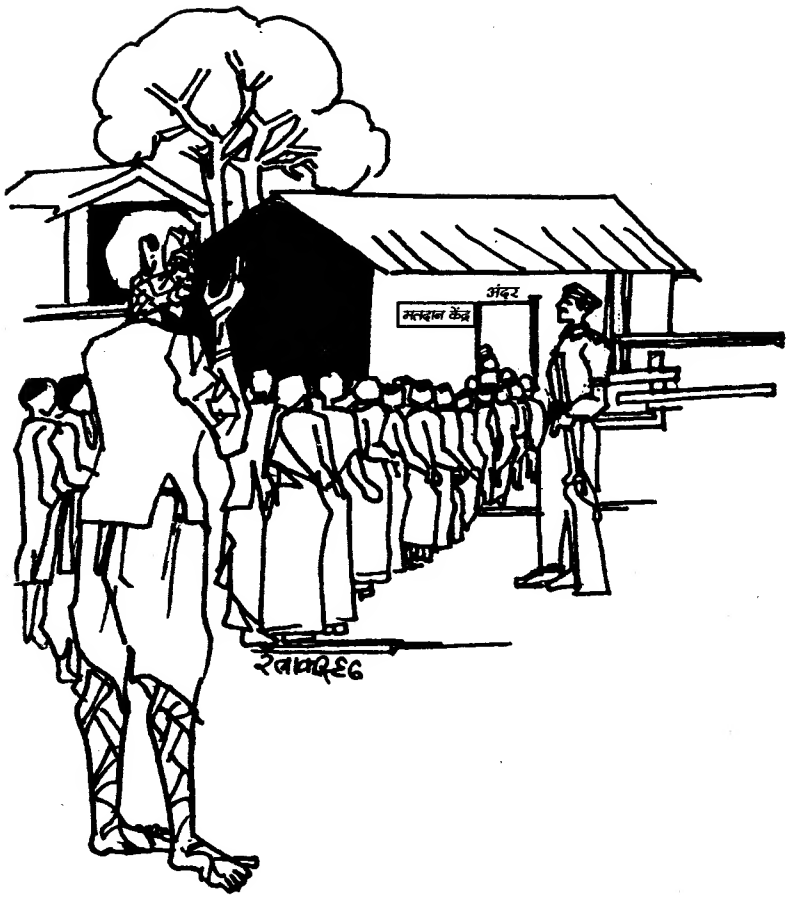

पार्टी का निशान था मोर। कहने का मतलब तरह-तरह की पार्टियाँ थीं। गुलाब वाली पार्टी के नेता का नाम श्याम कुमार महासेठ था। मोटर गाड़ी छाप वाले पार्टी का उम्मीदवार प्रेम कुमार मिश्रा था। साइकिल चक्का के उम्मीदवार का नाम रामसकारथ था। मुरादपुर गाँव में जो जिस जाति के उम्मीदवार थे वे उसी जाति के जमींदार के दरवाजे पर आते थे। उससे कहते थे हमें वोट दिलाओ।

एक दिन मोर वाली पार्टी के उम्मीदवार का भाषण हुआ। दलुदास भाषण सुनने आया। उस दिन बहुत भीड़ थी। मोरवाला

उम्मीदवार मनोरंजन पासवान बोल रहा था- ''जात-पात से देश और समाज नहीं चलता है। धर्म के नाम पर राजनीति करनेवाले देश तोड़ना चाहते हैं। हिंसा फैलाना चाहते हैं। इनके खिलाफ खड़ा होना होगा। इसलिए एक-एक वोट का महत्व है। बूथ लूटने वाले जनता के दुश्मन हैं। अपराधी को वोट मत दीजिए। उसे बूथ लूटने मत दीजिए। वोट डालना आपका मौलिक अधिकार है। संविधान ने यह अधिकार देश के हर नागरिक को दिया है। इसे कोई किसी से छीन नहीं सकता। किसी के कहने में न आएँ। वोट सोच-समझ कर दें। भाषण खत्म होते ही दलुदास जोर-जोर से ताली बजाने लगा। उसे इस नेता का भाषण सबसे अच्छा लगा।

मुरादपुर गाँव में साइकिल छाप का उम्मीदवार रामसकारत जमींदार के दरवाजे पर आया करता था। लक्ष्मीपुर टोला के वोट का इंतजाम रामसकारत के लिए जमींदार करता था। चुनाव के दिन सुबह-सुबह जमींदार का बेटा शिशिर और पन्ना लक्ष्मीपुर टोला आए। सबों को बुलाकर आदेश दिया कि साइकिल छाप को वोट देना है। एक भी वोट इधर से उधर नहीं होना चाहिए। दलुदास को भी यह आदेश था।

दलुदास ने सोचा कि मालिक के कहने से हमेशा वोट दिया। लेकिन हालत नहीं सुधरी। क्यों नहीं इस बार अपने मन से वोट दें। यह सोचते-सोचते वह बूथ पर पहुँचा। लाइन में लगा। उसे मतपत्र दिया गया। अंगुली में स्याही लगाई गई। मतपत्र में उसने खोजकर मोर छाप पर वोट दिया। मतपेटी में उसने मोड़कर अपना मतपत्र डाला। दलुदास आज मन ही मन खुश था। पहली बार उसने अपने मन से वोट दिया था। उसे मन ही मन गुदगुदी हो रही थी।

चुनाव परिणाम घोषित हुआ। साइकिल चक्का छाप रामसकारत

चुनाव हार गए। गाँव में सन्नाटा फैल गया। मोर छाप के उम्मीदवार मनोरंजन पासवान जीत गए। उनकी जीत के कारण मुरादपुर गाँव में झगडा-झंझट शुरू हो गया। लक्ष्मीपुर टोला के लोग डरे हुए थे। जमींदार अपने बेटे शिशिर और पन्ना के साथ कुछ लठैत लेकर टोले पर पहुँचा। शाम के समय टोले के लोगों को बुलावाया गया। जमींदार ने सबों से पूछा कि वोट किसको दिया? सबों ने कहा कि साइकिल चक्का छाप को वोट दिया। लेकिन दलुदास ने सच बात कह दी। उसने साफ कहा कि मोर छाप वाली पार्टी का उम्मीदवार बढ़िया लगा था। उसी को वोट दिया।

इतना सुनना था कि जमींदार भड़क उठा। दलुदास को गंदी-गंदी गालियाँ देने लगा। शिशिर और पन्ना यह कहते हुए दलुदास पर टूट पड़े कि नया-नया नेता बना है। घंटे भर तक दलुदास की पिटाई होती रही। उसकी झोपड़ी में आग लगा दी गई। रमरतिया की भी पिटाई हुई। जमींदार दलुदास से अपना कर्ज माँगने लगा। रह-रह कर उसकी पिटाई भी होती रही। जमींदार का तमतमाया चेहरा अचानक चीख उठा- ''साले का हाथ काट लो।'' थोड़ी

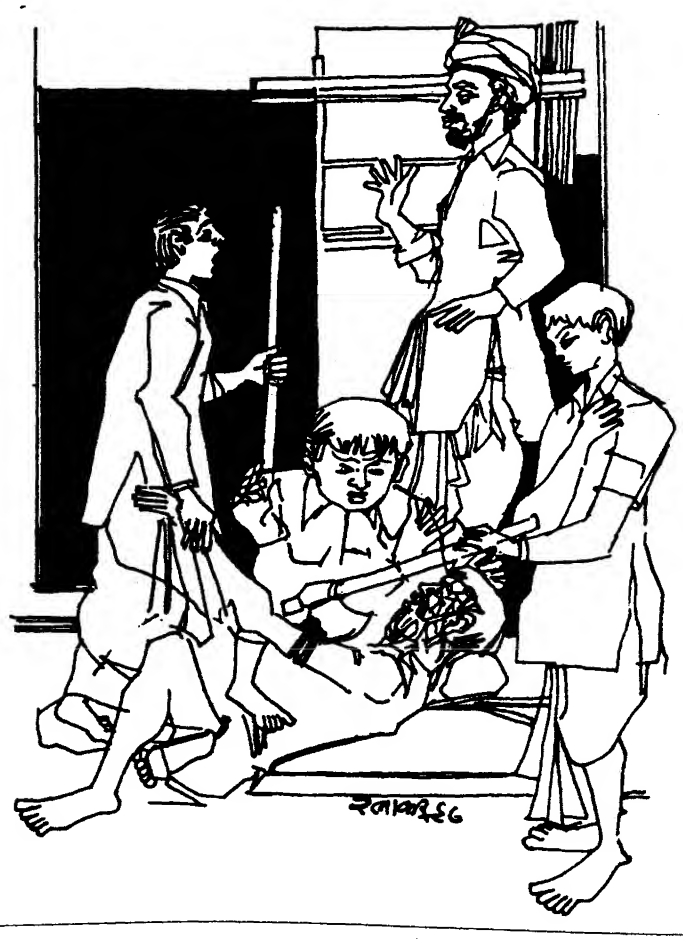

ही देर बाद फरसे से दलुदास के दोनों हाथ काट लिए गए। शोर मच गया। भगदड़ मच गई। सब के सब भाग खड़े हुए।

दलुदास को सुबह रमरतिया और दो तीन लोग छुपकर सहरसा अस्पताल लाए। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज की। यह खबर अखबार में छपी। शीर्षक था 'सामंतों का मारा, दलुआ बेचारा' लेकिन कुछ नहीं हुआ। उल्टे जमींदार ने दलुदास पर डकैती का मुकदमा कर दिया। इधर वह अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहा था। दलुदास के दामाद विश्वनाथ दास ने अपने श्वसुर की जमानत ली। अपनी बेटी के पास दलुदास तथा उसकी पत्नी रहने लगे।

अचानक एक दिन घर छोड़कर दलुदास निकल गया। दलुदास गाँव-गाँव घूमकर कबीर के निर्गुण भजन गाता है। निर्गुण भजन की तर्ज पर उसने एक गीत बनाया है। इसे सुनने के लिए भारी भीड़ जमा होती है। चौक चौराहे पर दलुदास अपनी धुन में गाता रहता है-

''सुनो, सुनो रे, भैय्या मोरा, सच की बात सुनो।
सूरज जब आया, नया सबेरा लाया,
बाबा आंबेदुकर और राजीन्द्र बाबू लिखा संविधान एक नया।
एक नया, एक नया।
इसमें है अधिकार हमारा, जीवन का रे सारा।
गाँव के मालिक सब वोट लेता है हथिया।
अपना वोट न किसी को देना।
अपने मन से वोट देना।
यह मौलिक अधिकार हमारा।
सुनो रे भैय्या अपने मन से वोट देना।''

हाथ कट जाने की घटना के बाद से दलुदास निडर होकर गाँव-गाँव घूमता है और निर्गुण भजन की तर्ज पर गा-गाकर वोट के महत्व को बतलाता है। इस तरह निर्गुणिया दलुदास मस्ती से अपनी गुजर-बसर कर रहा है।

❑❑❑

मशालें लेकर चलना

मशालें लेकर चलना, जब तक रात बाकी है
संभलकर हर कदम रखना, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना ....

मिले मंसूर को सूली, जहर सुकरात के हिस्से
रहेगा जुर्म सच कहना, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना ....

पसीने की तो तुम छोड़ो, लहू मजदूर का यारो
सस्ता पानी से रहेगा, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना ....

जब तक रहेंगे सिंगार, हर महफिल पे उल्लू ही
पपीहे की सुनेगा कौन, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना ....

झुका सर को तू मंदिर में, या मस्जिद में तू कर सजदा
तेरे गम तो न होंगे कम, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना ....

तेरे मस्तक पे होगा हर, पल विद्रोह का निशां
नहीं ये जोश कम होगा, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना ....

अंधेरों की अदालत में, है क्या फरियाद का फायदा
तू कर संग्राम ए साथी, जब तक रात बाकी है
मशालें लेकर चलना ....